विद्याश्री न्यास : गतिविधि 2016

हिन्दी साहित्य में सांस्कृतिक संवेदना और मूल्यबोध पर केन्द्रित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं भारतीय लेखक-शिविर

(वाराणसी, 13 से 15 जनवरी, 2016)

पं. विद्यानिवास मिश्र एवं उनकी धर्मपत्नी **श्रीमती राधिका देवी** की स्मृति में स्थापित **विद्याश्री न्यास** (2006) की सांवत्सर गतिविधियों में से एक, उनके जन्म-दिवस (14 जनवरी) पर प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले भारतीय लेखक-शिविर और राष्ट्रीय संगोष्ठी ने इस वर्ष 2016 में एक अन्तरराष्ट्रीय स्वरूप ग्रहण किया। **साहित्य अकादमी, नई दिल्ली** और **केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा** के सहयोग से **विद्याश्री न्यास** और **हिन्दी विभाग, श्री बलदेव पीजी कॉलेज, बड़ागाँव**, वाराणसी के संयुक्त तत्त्वावधान में **धर्मसंघ शिक्षामंडल,** वाराणसी के सभागार में **भारतीय लेखक-शिविर** और **'हिन्दी साहित्य में सांस्कृतिक संवेदना और मूल्यबोध'** विषय पर केन्द्रित **अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी** (13 – 15 जन. 2016) के उद्घाटन-सत्र (13 जन.) को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि माननीय **श्री केशरी नाथ त्रिपाठी**, राज्यपाल, पश्चिम बंगाल ने बताया कि साहित्य और संस्कृति दोनो समाज की उपज हैं, जीवन के संस्कारों और सरोकारों से जुड़े हैं। साहित्य के संस्कार पैदा करने होते हैं, जबकि संस्कारों का जीवन में संतरण ही संस्कृति है, दोनो समाज की दिशा देते हैं। मूल्यबोध को समय-सापेक्ष बताते हुए उन्होंने कालिदास, प्रसाद, प्रेमचंद आदि से उदाहण लेकर स्पष्ट किया कि कैसे साहित्य उनसे टकराने के भी विचार और आधार देता है। विशिष्ट अतिथि **प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय,** निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा ने हिन्दी साहित्य के संदर्भ को लोक और श्रम की संस्कृति से जोड़कर देखने पर बल दिया। हिन्दी का आदिकवि सरहपा सरह का काम करता है, वैदिक साहित्य से होड़ लेता है और लोक की महत्ता को पहचानता है और इस तरह हिन्दी साहित्य की एक अपनी राह बनती है। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में **प्रो. गिरीश चन्द्र त्रिपाठी,** कुलपति काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने सनातन साहित्य के उदात्त जीवन-मूल्यों पर आधारित होने की बात कही, साहित्य समाज का स्वच्छ दर्पण बना रहे इसके लिए साहित्यकारों से अपसंस्कृति और मूल्यहीनता के गर्दो-गुबार से उसे बचाए रखने की आशा और आश्वस्ति जाहिर की।

इस उद्घाटन-सत्र का शुभांरभ दीप-प्रज्ज्वलन, वाग्देवी और पं. विद्यानिवास मिश्र के चित्रों पर पुष्पार्पण तथा **श्री जयंतपति त्रिपाठी** के वैदिक स्तवन और **श्री उमापति दीक्षित** के पौराणिक मंगलाचरण से हुआ। मुख्य अतिथि ने **पं. विद्यानिवास मिश्र चित्र–वीथि**, **पोस्टर-प्रदर्शनी** और **पुस्तक-प्रदर्शनी** का उद्घाटन किया। मंचस्थ अतिथियों द्वारा **साहित्य अकादमी, नई दिल्ली** से प्रकाशित **'विद्यानिवास मिश्र संचयन'** तथा म.गां. अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के लिए **राजकमल** से प्रकाशित **'विद्यानिवास मिश्र संचयिता'** को लोकार्पित किया गया। अपने स्वागत वक्तव्य में **श्री अरुणेश नीरन** ने इस अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी के विषय को प्रस्तावित करते हुए उसकी बहुआयामिता को रेखांकित किया। इस सत्र में संगोष्ठी में पधारे प्रवासी हिन्दी साहित्यकारों **श्री तेजेन्द्र शर्मा (इंग्लैण्ड)**, **श्रीमती जयावर्मा (इंग्लैण्ड), श्रीमती शैल अग्रवाल (इंग्लैण्ड), श्रीमती सुशम वेदी (अमेरिका)** और **श्रीमती स्नेह ठाकुर (कनाडा)** को मुख्य अतिथि ने माल्यार्पण, अंगवस्त्र, नारिकेल, स्मृति-चिहन, पुस्तक आदि प्रदान कर सम्मानित किया। सत्र का संयोजन-संचालन प्रसिद्ध कवि-कथाकार **श्रीमती नीरजा माधव** ने तथा कृतज्ञता-ज्ञापन **प्रो.महेश्वर मिश्र**, संस्थापक, विद्याश्री न्यास ने किया।

पहले अकादमिक सत्र '**प्रवासी हिन्दी लेखन : वैश्वीकरण और सांस्कृतिक संवेदना**' में **डॉ. भरत प्रसाद त्रिपाठी (शिलांग)** ने प्रवासी हिन्दी लेखन से भारत-भावित होने के साथ ही जिस देश में वह आकार ले रहा है उसके जीवन-यथार्थ से भी जुड़े रहने की अपेक्षा की। ब्रिटेन से पधारी **श्रीमती शैल अग्रवाल** ने भारतीय संस्कृति को गंगा की पवित्र धारा की तरह बताया जो प्रवासी हिन्दी लेखन में भी प्रवहमान है। **श्रीमती सुशम बेदी (अमेरिका)** ने इस विंडबना को रेखांकित किया कि एक तरफ अगर भारत का युवा स्थापित मूल्यों के प्रति विद्रोह का भाव रखता है तो दूसरी तरफ अमरीका में रहने वाले भारतीयों की चिन्ता यह होती है कि वे किस तरह अपनी संस्कृति और अपने मूल्यों को बचाए-बनाए रखें। **श्री तेजेन्द्र शर्मा (इंग्लैण्ड)** ने स्पष्ट किया कि कैसे ब्रिटेन में मंदिरों ने एक नया किरदार अपना लिया है, उन्होंने धर्म और अध्यात्म के अलावा भारतीय भाषाओं,

संगीत एवं योग के शिक्षण-प्रशिक्षण से भी स्वयं को जोड़ लिया है। **श्रीमती जय वर्मा** ने प्रवासी हिन्दी साहित्य को भारतीय और तद्देशीय संस्कृति की समन्वित अभिव्यक्ति, उनके टकराव और उनकी साझेदारी की समझ के साथ समझने पर जोर दिया। अध्यक्षीय वक्तब्य में **श्री सत्यकाम** ने कहा कि प्रवासी हिन्दी लेखन हिन्दी का अपना साहित्य है, जिसमें हमारी संवेदना, मूल्यों और संस्कृति को वैश्विक विस्तार मिला है, उसने हमारे सांस्कृतिक-संतरण के विभिन्न आयामों को उद्घाटित किया है। इस सत्र का संयोजन **डॉ. राम सुधार सिंह** ने किया।

दूसरे अकादमिक सत्र **'हिन्दी का प्रारंभिक युग : सामाजिक राजनैतिक सरोकार'** में **डॉ. अवधेश प्रधान** ने नाथ-सिद्ध-जैन एवं रासो साहित्य के सामाजिक-राजनैतिक सरोकारों की विस्तार से चर्चा करते हुए उनकी सीमाओं की तरफ भी संकेत किया। **श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी (नई दिल्ली)** ने बताया कि आदिकाल से लेकर रीतिकाल तक का साहित्य हिन्दी के विकास में तमाम भारतीय भाषाओ के योगदान का दस्तावेज है, भाषा ही नहीं, संस्कृति और मूल्यबोध के स्तर पर भी। अमीर खुसरो, विद्यापति आदि के माध्यम से एक ही भारतीय संस्कृति की वैविध्यपूर्ण भंगिमाएँ प्रकट होती हैं। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में **डॉ. विमलेश कांत वर्मा** ने आदिकाल के राज्याश्रित साहित्य की अपेक्षा लोकाश्रित साहित्य को सामाजिक-राजनैतिक सरोकार की दृष्टि से अधिक महत्त्वपूर्ण बताया। इस अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी के पहले दिन का समापन पं. विद्यानिवास मिश्र के व्यक्तित्व-कृतित्व पर आधारित, **डॉ. मुक्ता** निर्देशित वृत्तचित्र **'छितवन की छाँह'** के प्रदर्शन के साथ हुआ।

दूसरे दिन (14 जनवरी) की शुरुआत **सम्मान समारोह** से हुई। समारोह के मुख्य अतिथि **श्री अच्युतानन्द मिश्र**, पूर्व कुलपति, माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता वि.वि., विशिष्ट अतिथि **डॉ. पृथ्वीश नाग,** कुलपति, म.गां. काशी विद्यापीठ एवं चिन्तक-विचारक श्री महेन्द्र जी एवं विद्याश्री न्यास के संस्थापक **श्री महेश्वर मिश्र**, सचिव **डॉ. दयानिधि मिश्र** एवं श्री बलदेव पीजी कॉलेज के प्राचार्य **डॉ. उदयन मिश्र** ने **आ. विद्यानिवास मिश्र स्मृति सम्मान** से उर्दू-हिन्दी के प्रसिद्ध कवि-आलोचक **श्री शीन काफ़ निज़ाम** को, **लोककवि सम्मान** से **श्री होरीलाल 'अशान्त'** को, **लोककला सम्मान** से कवि-चित्रकार, कला-मर्मज्ञ **प्रो. मंजुला चतुर्वेदी** को तथा **श्रीकृष्ण तिवारी स्मृति गीतकार सम्मान** से वरिष्ठ कवि **श्री सुरेन्द्र वाजपेयी** को समारोहपूर्वक माल्यार्पण, अंगवस्त्र, नारिकेल, पुस्तक, प्रशस्ति-पत्र, स्मृति-चिहन एवं पुरस्कार-राशि से सम्मानित किया। **श्री लेखमणि** ने स्वस्ति-वाचन किया। स्वीकृति वक्तव्य के रूप में चारो विभूतियों ने अपने काव्य-पाठ से इस सत्र को संपन्नतर किया। इस अवसर पर **वाणी प्रकाशन** से **विद्यानिवास मिश्र ग्रंथमाला** के अन्तर्गत प्रकाशित '**इतिहास, परम्परा और आधुनिकता'**, **'लोक और शास्त्र : अन्वय और समन्वय'** तथा **कोशल पब्लिसिंग हाउस** से प्रकाशित **डॉ. मंजूषा मिश्र** की पुस्तक **'विद्यानिवास मिश्र : परम्परा और आधुनिकताबोध'** का मंचस्थ अतिथियों ने लोकार्पण किया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि **डॉ. पृथ्वीश नाग** ने पावर प्रेजेंटेशन के माध्यम से भक्तिकालीन साहित्य के भौगौलिक प्रभावों को प्रस्तुत करते हुए साहित्य के माध्यम से भौगोलिक अध्ययन के विविध आयामों को उद्घाटित किया। **श्री महेन्द्र जी** ने साहित्य-सृजन को सांस्कृतिक संवेदना और मूल्यबोध से संपन्न होने और इन्हें संपन्नतर करने वाला बताते हुए इस आयोजन के महत्त्व को रेखाकित किया। मुख्य अतिथि **श्री अच्युतानन्द मिश्र** ने भारतीय मूल्यबोध को लोक की तथा पश्चिमी मूल्यबोध को सत्ता की संस्कृति से संचालित बताते हुए दोनो के फर्क को रेखांकित किया। उन्होंने हमारे सांस्कृतिक मूल्यबोध के पश्चिम-प्रभावित होते जाने के प्रति चिन्ता जाहिर करते हुए सजगता से इसका सामना करने पर बल दिया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में **प्रो. इन्दुनाथ चौधरी** ने कहा कि भारतीय संस्कृति के प्रति हमारे मन में आग्रह और आस्था का होना आवश्यक है। पश्चिम की संस्कृति 'बाहरी' से डरती है, हम स्व और पर के भेद को अस्वीकार करते हैं। लोक और शास्त्र का अनुपूरक होना, परम्परा और आधुनिकता का एकात्म होना हमारी सांस्कृतिक विशेषता है। सत्र का संयोजन **प्रकाश उदय** ने धन्यवाद-ज्ञापन **श्री महेश्वर मिश्र** ने किया। इस सम्मान-समारोह को **यांकी टांगु** के अरुणाचली और **जया गोगोई** तथा **विजुमणि बोड़ो** के बिहू नृत्य ने एक अलग तरह के आकर्षण से संपन्न किया।

तीसरे अकादमिक सत्र **'सांस्कृतिक संवेदना और मूल्यबोध : विमर्श की दृष्टियाँ'** में **श्री शीन काफ़ निज़ाम** ने मनुष्य को मूल्यों का स्रष्टा और संरक्षक बताया। मूल्य का संरक्षण और संप्रेषण साहित्य द्वारा ही संभव है। उन्होंने संस्कृति को उन संबंधो का दूसरा नाम बताया जिन्हें मानव संपूर्ण सृष्टि से कायम करता है, संवेदना उन्हीं संबंधो को सुदृढ़ करती है, जिन उपायों से, उनमें से एक है साहित्य। सहानुभूति का समानुभूति में

रूपान्तरण भारतीय संस्कृति की विरल विशिष्टता है। **श्री लीलाधर जगूड़ी** ने बताया कि संस्कृति शब्द बहुत खतरे में है क्योंकि उसकी एक तस्वीर बना दी गई है। संस्कृति एक गतिशील गतिविधि है, उसे शास्त्र से निकालकर चित्तवृत्ति की खेती बनाना पड़ेगा। **श्री नंदकिशोर आचार्य** ने संस्कृति को चित्त की निर्मिति मानते हुए कहा कि सामाजिक संवेदना के विकास में शास्त्र की तुलना में साहित्य की भूमिका अधिक महत्त्वपूर्ण है। **प्रो. चितरंजन मिश्र** के अनुसार सांस्कृतिक संवेदना का अर्थ है निरन्तर अपने को परिमार्जित करते रहने का विवेक और अपने लिए कुछ करने या सोचने की जगह दूसरे के बारे में सोचने का जज्बा। मूल्य का अर्थ है किसी भी मान्यता या जीवन-पद्धति के निर्वाह के सांसारिक आकर्षणों को छोड़ने का साहस। **डॉ. विद्या शंकर शुक्ल** ने संवेदना और मूल्यबोध संबन्धी विमर्श को सामान्य जनजीवन से जोड़ने पर बल दिया। अपने अध्यक्षीय वक्तब्य में **पं. कमलेश दत्त त्रिपाठी** ने कहा कि भारतीय साहित्य की अवधारणा ही सांस्कृतिक निजता की अवधारणा में निहित है। समकालीन भारतीय लेखन और उसी का प्रमुख प्रतिनिधि हिन्दी लेखन सतत सांस्कृतिक संवेदना और उसमें निहित केन्द्रीय मूल्य के बोध के प्रश्न से जूझता रहा है अतः लेखन में एक अन्तर्द्वन्द्वनिरन्तर विद्यमान रहा है। यह लेखन पश्चिम के चिन्तन से आए मूल्यबोध और भारतीय सांस्कृतिक संवेदन के संघर्ष और संश्लेषण की कठिन राह पर है और इस कठिनाई को बूझना और इससे जूझना अनिवार्यप्राय है। इस सत्र का संयोजन **प्रभाकर मिश्र (गोंडा)** ने किया।

'मध्यकालीन कविता : मूल्यों की उद्भावना' विषयक चौथे सत्र में **श्री दयानिधि यादव** ने भक्तिकाल की रचनाओं में पारिवारिक-सामाजिक सद्भाव की आकांक्षा की मूल्यवत्ता स्पष्ट की। **डॉ. आरती स्मित** के अनुसार रचनाकार समाज का प्रतिनिधि पहले होता है, रचनाकार बाद में। उन्होंने मध्यकालीन हिन्दी कविता की नारी-चेतना की सीमाओं को भी स्पष्ट किया। ललित निबंधकार **श्रीराम परिहार (खंडवा)** के अनुसार सम्यक कृति ही संस्कृति है, मनुष्य के सम्यक कार्य और व्यवहार की विस्तृत व्याख्या मध्यकालीन साहित्य में हुई है अतः जीवन और सृष्टि के हित के मूल्यों का प्रतिपादन भक्तिकाल में विशेषतः हुआ है। **डॉ. अवधेश शुक्ल (भोपाल)** ने कहा कि मध्यकालीन कविता में लोक से लोकोत्तर तक की व्याप्ति है, लोक और शास्त्र में उसकी गहरी पैठ है। सत्य, धर्म, प्रेम आदि मानवमूल्यों को इसमें सर्वाधिक प्रतिष्ठा मिली है। **प्रो. सदानन्द शाही** ने कहा कि धर्म, संस्कृति, संवेदना और साहित्य जिन मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठित करते हैं, पाखण्ड उन्हें सोख लेने को प्रयत्नशील रहते हैं, इसलिए भक्तिकाल की कविता हर तरह के पाखण्ड पर सबसे बढ़कर चोट करती है और कथनी और करनी के बीच एकता को एक बड़े मूल्य के रूप में स्थापित करती है। भक्तिकाल की यह मूल्य व्यवस्था प्रेम तक पहुँचने का उपाय है, वह एक भेदरहित समाज की रचना का प्रस्ताव रखती है। **प्रो.कृष्णचंद लाल** ने बताया कि मूल्यचेतना मनुष्य के जाग्रत विवेक की चेतना है। भक्तिकाल का प्रत्येक कवि स्वाधीन चेतना, जाग्रत विवेक का कवि है इसलिए प्रतिरोध की एक बड़ी चेतना जगाता है और पराधीनता का विरोध करता है। भक्तिकाव्य स्वाधीन चेतना का काव्य है। अपने अध्यक्षीय संबोधन में **प्रो. अनन्त मिश्र** ने कहा कि साहित्य में कोई काल-विभाजन नहीं होता, व्यक्ति अपने यथार्थ में जितना उससे कहीं अधिक अपने स्वप्न में जीवित रहता है। हम संसार को मिथ्या बताकर उसे छोड़ नहीं सकते। मध्यकाल की कविता प्रेम और उल्लास की कविता है वह सत्ता की चेतना के प्रतिरोध की कविता है। मूल्यबोध बिना त्याग के संभव नहीं, मध्यकाल की कविता यह स्थापित करती है। इस सत्र के संयोजन का दायित्व **प्रो. वशिष्ठ अनूप** ने निभाया।

पाँचवे सत्र **'युवा समवाय'** में चयनित रचनाओं/आलेखो के पाठ के अन्तर्गत **डॉ मीनाक्षी दूबे**, **अनुराधा रानी श्रीवास्तव, डॉ. सुनील कुमार मानस, आलोक सिंह** एवं **अतुल वैभव** ने आलेख-वाचन किया तथा **शैलेश यादव, दीपक कुमार, मिलिन्द गौतम, आलोक सिंह** और **अतुल वैभव** ने काव्य-पाठ किया। **प्रो. श्रद्धानन्द** ने पुरस्कृत रचनाकारों की घोषणा के साथ ही रचनाओं और आलेखों पर एक सारगर्भित टिप्पणी प्रस्तुत की, अध्यक्ष **डॉ. जितेन्द्र नाथ मिश्र** ने इस युवा समवाय की महत्ता को रेखांकित किया। इस सत्र का कुशल संचालन **डॉ. बलवीर सिंह** ने किया।

दूसरे दिन का समापन **श्री हरिराम द्विवेदी** की अध्यक्षता और **डॉ. जितेन्द्र नाथ मिश्र** के संयोजन में **श्री शीन काफ़ निज़ाम**, **श्री सुरेन्द्र वाजपेयी, श्री परमानन्द आनन्द, दानिश, अलकबीर, ब्रजेन्द्र त्रिपाठी, अरुणेश नीरन, देवेन्द्र शुक्ल, बलभद्र** सहित चालीस से अधिक कवियों के प्रभावी काव्य-पाठ से हुआ।

संगोष्ठी के तीसरे दिन छठे अकादमिक सत्र **'आधुनिक हिन्दी कविताः आत्म और परिवेश का संघर्ष'** में **श्रीमती अनीता पंडा** ने पूर्वोत्तर राज्यों के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक हिन्दी कविता के अद्यतन स्वरों को, पूर्वोत्तर के मूल निवासियों के जीवन-संघर्ष, आरोपित नियम-कानूनों के प्रति उनके आक्रोश की अभिव्यक्ति को रेखांकित किया। **डॉ. भारती गोरे** ने सामाजिक-राजनीतिक उलटफेर को समाहित करने के साथ ही उसे अतिक्रमित भी करती हुई आधुनिक हिन्दी कविता के मन-मिजाज की पहचान प्रस्तुत की। **डॉ. कुमुद शर्मा** ने कहा कि आज की कविता भी आज के परिवेश में भारतीय सांस्कृतिक छोरों को छूती है, उनके प्रभाव ग्रहण करती है और भविष्य की संभावनाओ को अभिव्यक्त करती है। **प्रो. आनन्दवर्धन** ने आधुनिक हिन्दी कविता की, बाल-मन से दूरी को हमारी संवेदना और मूल्यबोघ के धार खो देने के रूप में रेखांकित किया। **प्रो. चन्द्रकला त्रिपाठी** ने बताया कि एक संवेदनशील कवि अपने भीतर निरन्तर एक टकराहट का अनुभव करता है। आज अगर बेदखली हुई है तो मानवीयता की, मूल्यों की, वीरता हिंसा में बदल गई है, प्रेम सेक्स में। आधुनिक हिन्दी कविता ही नहीं, हमारे संपूर्ण साहित्य-कर्म के सामने इन बेदखलियों को बेदखल करने और इन बदलावों को बदलने की चुनौती है। अपने अध्यक्षीय वक्तब्य में कवि **लीलाधर जगूड़ी** ने हिन्दी कविता को देखने-समझने के लिए नई दृष्टि की जरूरत बताई। आदि कविता को उदाहृत करते हुए उन्होंने कहा प्रेम बाधित करने वाले व्याध को प्रतिष्ठा न मिले, इस अभिशाप के साथ प्रस्तुत हमारी कविता लोकतंत्र को कायम करने के प्रथम प्रयास की तरह है। 'कथन विशेष' से कवि बनता है, उसके साथ तार्किकता भी जुड़ जाये तो कविता बनती है। उन्होंने अपनी कुछ कविताओं की प्रस्तुति से इस सत्र को विशेषतः समृद्ध किया। सत्र का संयोजन **प्रो. वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी** ने किया।

सातवें **'आधुनिक हिन्दी कथा-साहित्य : मूल्य-संधान के बदलते आयाम'** और आठवें **'कथेतर हिन्दी गद्य : मूल्यों का पुनराविष्कार'** को एक साथ संयुक्त किया गया। **श्रीमती विद्या केशव चिटको** ने सत्ता, संपत्ति और स्व को मूल्यों को बदलने वाले कारक के रूप में चिह्नित किया। उहोंने कई कहानियों के माध्यम से मूल्य-संक्रमण के विविध रूपों को रेखांकित किया। **डॉ. प्रेमशीला शुक्ल** ने कहा कि मनुष्य स्वभावतः मूल्यान्वेषी है, विद्या के विभिन्न उपादनों के माध्यम से मनुष्य मूल्य-संधान करता आया है। कथाकार पात्रों, प्रसंगों और पात्रों की मनःस्थितियों के साक्षात्कार के माध्यम से इसे सम्पन्न करता है। **डॉ. बाबूराम त्रिपाठी** ने बताया कि मूल्यों के टकराव ने भी युगानुरूप अनेक मूल्यों का सृजन किया है। जिन्हें हम शाश्वत मूल्य कहते हैं वे किसी-न-किसी रूप में हमारे कथा-साहित्य में प्रकट होते रहे हैं। **डॉ. सुरेश्वर त्रिपाठी** ने स्त्रियों की आत्मकथाओं को समाज के असली दर्पण के रूप में रेखांकित किया। ये आत्मकथाएँ बताती हैं कि स्त्रियों को अक्सर अपनी लड़ाई अपने घर में, अपनों से लड़नी पड़ी है। वे एक अंधेरे सुरंग से उनके बाहर निकल आने की शौर्य गाथा से परिचित कराती हैं। केरल से आए **श्री आर. सेतुनाथ** ने चैतन्य महाप्रभु, तुलसीदास, शंकराचार्य आदि द्वारा स्थापित जीवन-मूल्यों के साथ उन ग्रामीण आंचलिक जीवन के मूल्यों के तारतम्य को स्थापित किया जिन्हें हिन्दी उपन्यासकारों ने अपने कथाकर्म से चिह्नित किया है। **श्री वशिष्ठ मुनि ओझा** ने तमाम लघु गद्य-विधाओं से उदाहरण लेते हुए पुनराविष्कृत जीवन-मूल्यों की तरफ ध्यान आकर्षित किया। **श्री सुशील कुमार पाण्डेय** ने विशेषतः कुबेर नाथ राय के निबंधों के परिप्रेक्ष्य में सांस्कृतिक संवेदना और मूल्यबोध की चर्चा की। अपने अध्यक्षीय संबोधन में **डॉ. बलराज पाण्डेय** ने कहा कि आधुनिक हिन्दी कथा-साहित्य ने श्रम की संस्कृति को महत्त्व दिया है। श्रम करने के प्रति समाज में जो उपेक्षा का भाव था, आधुनिक कथा-साहित्य ने उसे दूर किया और दलित, आदिवासी और स्त्री के श्रम के प्रति संवेदना व्यक्त की। आज का कथा-साहित्य हाशिए के समाज के प्रति सर्वाधिक संवेदनशील है। इस सत्र का कुशल संयोजन **डॉ. बृजबाला सिंह** ने किया।

समापन-समारोह के अन्तर्गत सर्वप्रथम विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत छात्र-छात्राओं को मुख्य अतिथि **श्री यदुनाथ दूबे,** कुलपति, संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय और अध्यक्ष **श्री नंदकिशोर आचार्य** के हाथो पुरस्कृत किया गया। **कविता-प्रतियोगिता** में **आलोक सिंह, नरगिस बानो** और **शैलेश यादव** ने, **निबंध-प्रतियोगिता** में **छाया कुमारी, परवीन बानो** और **सुष्मिता पटेल** ने तथा संगोष्ठी के विषय पर केन्द्रित आलेखों में **डॉ. मीनाक्षी दूबे, अनुराधा रानी श्रीवास्तव** और **आलोक सिंह** ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय

और तृतीय स्थान प्राप्त किया। विभिन्न प्रतियोगिताओं में **दीपक कुमार, मिलिन्द गौतम, अतुल वैभव, सुनील कुमार मानस** एवं **संगीता यादव** ने सान्त्वना पुरस्कार प्राप्त किया। **डॉ. सपना सिंह** और **डॉ. सुनील कुमार मानस** ने इस तीन दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी पर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि **श्री यदुनाथ दूबे** ने संस्कृत हिन्दी की क्लासिक रचनाओं से उदाहरण लेते मूल्यबोध को समझने की बात कही। उन्होंने विद्याश्री न्यास के सांवत्सर आयोजनों के महत्त्व को भी रेखांकित किया। अध्यक्षीय संबोधन में **श्री नन्द किशोर आचार्य** ने सांस्कृतिक संवेदना और मूल्यबोध के संदर्भ में पं. विद्यानिवास मिश्र के चिन्तन का एक सार-संक्षेप प्रस्तुत किया। विद्याश्री न्यास के सचिव **डॉ. दयानिधि मिश्र** ने विभिन्न अकादमिक सत्रों में प्रतिष्ठित वक्ताओं के श्रोता के रूप में भी उपस्थित रहने, नगर के तीनो विश्वविद्यालय और प्रायः सभी महाविद्यालयों की तरफ से इस आयोजन में सक्रिय सहयोग और 600 से अधिक प्रतिभागियों की भागीदारी को इस आयोजन की उपलब्धि के रूप में रेखांकित करते हुए सबके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

पोस्टर प्रदर्शनी, चित्रवीथि और कविता पोस्टरों ने इस आयोजन को एक भव्य रूप दिया। इसके लिए **संभावना कला मंच** का आभार मानते हुए सचिव विद्याश्री न्यास ने उसके निदेशक **डॉ. राजकुमार सिंह** को सम्मानित करते हुए कलाकारों **राजीव कुमार गुप्ता, सपना सिंह, शालिनी सिंह, एजाज अहमद, आशीष कुमार गुप्ता, कृष्ण कुमार पासवान, फरहीन बानो, अनिता माला, रवि कुमार चौरसिया, वरूण कुमार मौर्य, मीरा वर्मा, साधना माला, बृजेश, आनंद, शाहिद, चन्दन** और **सुधीर सिंह** को पुरस्कृत किया।

पं. विद्यानिवास मिश्र की पुण्यतिथि पर संस्कृत कवि–गोष्ठी सम्पन्न

विद्याश्री न्यास के सांवत्सर कार्यक्रमों में से एक संस्कृत कवि–गोष्ठी पण्डित विद्यानिवास मिश्र की पुण्य तिथि पर दिनांक 14 फरवरी 2016 को बौद्ध–दर्शन विभाग, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में योग–साधना केन्द्र में **प्रो. यदुनाथ प्रसाद दूबे**, कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। मुख्य अतिथि के रूप में **प्रो. शिवजी उपाध्याय** की उपस्थिति से गोष्ठी विशेषतः गौरवान्वित हुई। आयोजन का शुभारम्भ माँ सरस्वती एवं विद्यानिवास मिश्र के चित्र पर मुख्य अतिथि व अध्यक्ष द्वारा माल्यार्पण व दीप–प्रज्ज्वलन से हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि और अध्यक्ष का विद्याश्री न्यास के सचिव डॉ. दयानिधि मिश्र ने अंगवस्त्र से सारस्वत सम्मान किया। स्वागत **डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय** और संचालन **आचार्य पवन कुमार शास्त्री** ने किया।

मुख्य अतिथि **प्रो. शिव जी उपाध्याय** ने कहा कि हिन्दी भाषा के लिए संस्कृत का ज्ञान होना आवश्यक है जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण पं. विद्यानिवास मिश्र का कृतित्व है और महाकाल की स्तुति में अपनी एक विशिष्ट रचना सुनाई। **डॉ. कौशलेन्द्र पाण्डेय** ने 'मनो भग्नम्', शीर्षक गीत, राजाराम शुक्ल ने 'हन्ते कवे किम् कृत्रम्–किम कृतम्', राजेन्द्र पाण्डेय ने 'भवतु मनो में शिवशंकल्पम्' **पवन कुमार शास्त्री** ने 'भारतीया संस्कृतेरात्मा वसति संस्कृत वाङ्गमय' शीर्षक कविता सुनाई। **विवेक पाण्डेय** ने व्यंग प्रधान कविता 'न जाने किम सखे जातं' तथा **गायत्री प्रसाद पाण्डेय** ने 'कोयम आतंकवादः' को समसमायिकी से संबद्ध कर गम्भीर कविता सुनाई। **विजय कुमार पाण्डेय, धर्मदत्त चतुर्वेदी** व **उमाकान्त चतुर्वेदी** ने पं. विद्या निवास मिश्र की पुण्य स्मृति में रचित कविताओं से भाव विभोर कर दिया। **श्रीमती कमला पाण्डेय** ने वसन्त ऋतु पर 'सखि आगतो मधु मास रति मधुरायते हृदयं मम्' का सस्वर पाठ कर श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। युवा कवियों **केशव पोखरेल, आशीष मणि त्रिपाठी, विनीता सिंह, मणिकान्त पाठक** आदि ने क्रमशः 'ख्याताः लोक हिताय कार्य करणे', 'राष्ट्र सेवन कार्य मेतद् देवपूजन कार्यमेव', वादयहे घनश्याम मुरलिकाम्', 'कालिदासः जने जने कण्ठे कण्ठे संस्कृतम्' शीर्षक रचनाओं का मधुर पाठ किया।

अध्यक्षीय संबोधन में प्रो. यदुनाथ प्रसाद दूबे ने संस्कृत सम्भाषण के प्रचार–प्रसार पर बल देते हुए संस्कृत कवि–गोष्ठी की महत्ता पर प्रकाश डाला तथा आशा व्यक्त की कि भविष्य में यह परम्परा उत्तरोत्तर समृद्ध होगी। धन्यवाद ज्ञापन विद्याश्री न्यास के सचिव डॉ. दयानिधि मिश्र ने किया। गोष्ठी में सर्वश्री **जयप्रकाश नारायण त्रिपाठी, जितेन्द्र शाही, प्यारेलाल पाण्डेय, उदयन मिश्र, ध्रुवनारायण पाण्डेय, प्रकाश उदय, सत्येन्द्र मिश्र, सुरेन्द्र प्रजापति** आदि तथा बड़ी संख्या में अध्यापक व छात्र उपस्थित रहे।

अज्ञेय के उपन्यासों का पुनरालोकन : राष्ट्रीय परिसंवाद

अज्ञेय के जन्म–दिवस पर, 07 मार्च 2016 को, अज्ञेय की जन्म–भूमि कुशीनगर के अज्ञेय स्मृति सभागार में कुसुमांजलि फाउण्डेशन, नई दिल्ली के सहयोग से विद्याश्री न्यास, श्रद्धानिधि न्यास, अज्ञेय भारतीय साहित्य संस्थान एवं राजकीय बौद्ध संग्रहालय के संयुक्त तत्त्वावधान में 'अज्ञेय के उपन्यासों का पुनरालोकन' विषय पर केन्द्रित एक राष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन किया गया। इसके उद्घाटन–सत्र में विषय–प्रवर्तन करते हुए **श्री अरुणेश नीरन** ने अज्ञेय के व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों के उनके उपन्यासों में प्रतिबिम्बित होने की बात कही। उद्घाटन–वक्तव्य में मुख्य अतिथि **श्री विश्वनाथ प्रसाद तिवारी** ने अज्ञेय को उनके रचना–संदर्भों के हवाले से वैज्ञानिक यथार्थवादी चेतना से लैस, आधुनिकता के अग्रदूत, मानवीय स्वातंत्र्य के अन्वेषी, बुद्धिवादी और मानव–गरिमा को स्थापित करने वाला रचनाकार बताया। स्त्री एवं दलित विमर्श के बीज उनके उपन्यासों में मिलते हैं। अपने अध्यक्षीय संबोधन में **श्री रामदेव शुक्ल** ने बताया कि अज्ञेय व्यक्ति की अर्थवत्ता को केन्द्र में रखकर सोच–विचार पर बल देते हैं। उनकी रचनाएँ एकाग्रता की समग्र साधना की देन है। उद्घाटन–सत्र में अतिथियों का स्वागत करते हुए **श्री महेश्वर मिश्र** ने इस आयोजन और इसके विषय की प्रासंगिकता को स्पष्ट किया। धन्यवाद–ज्ञापन **श्री गणेश प्रसाद शुक्ल** ने किया।

आयोजन का पहला अकादमिक सत्र अज्ञेय के उपन्यास **'शेखर : एक जीवनी'** और 'नदी के द्वीप' पर केन्द्रित था। **श्री प्रमोद कुमार सिंह** ने शेखर : एक जीवनी के संदर्भ लेते हुए बताया कि उसे स्वातंत्र्य की खोज का उपन्यास मानना चाहिए। आत्मा के प्रकाश में शेखर बराबर जिस सत्य के संधान में लगा है वह संधान अज्ञेय का भी उतना ही अपना है। **प्रकाश उदय** ने शेखर : एक जीवनी के विभिन्न प्रदेयों की चर्चा करते हुए उसे कविता सहित साहित्य की विभिन्न विधाओं की रचना–शक्ति से सम्पन्न बताया। **श्री गिरिराज किशोर** ने 'नदी के द्वीप' के रचयिता को स्त्री–मुक्ति के जबरदस्त पैरोकार के रूप में स्थापित किया। **श्री अपूर्वानन्द** ने नदी के द्वीप को आज के समय–संदर्भों में देखने–समझने की चेष्टा की। अज्ञेय को उन्होंने साधारणता को महत्त्व देने वाले, श्रेष्ठता के दंभ पर प्रहार करने वाले कथाकार के रूप में रेखांकित किया।

दूसरे सत्र के पहले चरण में अज्ञेय के तीसरे उपन्यास **'अपने–अपने अजनबी'** की चर्चा हुई। **श्री नन्दकिशोर आचार्य** ने अज्ञेय के उपन्यासों में इसे अपने पहली पसंद मानते हुए इसमें आए तीन रूपकों काठघर, टूटा पुल और अंधी गली के माध्यम से इसके कथ्य को विश्व–परिदृश्य में विश्लेषित किया। उन्होंने इसे पाश्चात्य और भारतीय दृष्टि के टकराव के बजाय अहम्बद्धता और अहम से मुक्ति के टकराव के रूप में समझने का आग्रह रखा। **श्री अवधेश प्रधान** ने अपने सुचिन्तित आलेख में नदी क द्वीप के उन निहितार्थों तक पहुँचने की कोशिश की जो मृत्यु और नियति के गंभीर प्रश्नों को उठाते हैं, इनके सामने मनुष्य की बेबसी के साथ ही उस बेबसी से मुक्ति के मानवीय प्रयत्नों को सामने लाते हैं। सत्र के दूसरे चरण में अज्ञेय के समग्र उपन्यास–कर्म को विषय बनाते हुए **श्री चितरंजन मिश्र** ने कहा कि अज्ञेय एक गहरी संवेदना के साथ नैतिकता की बनी–बनाई अवधारणाओं को प्रश्नांकित करते हैं। उनके उपन्यास दृष्टि को विस्तार देते हैं, दिमाग की गाँठों खोलते हैं। नदी के द्वीप के त्रिकोणीय प्रेम में आत्मदान का जो पक्ष है वह भक्तिकाल की याद दिलाता है। **श्री ओम थानवी** ने अज्ञेय के व्यक्तित्व, अपने संस्मरण–संदर्भ और उनके रचना–संसार के विभिन्न पहलुओं की चर्चा करते हुए कुछ निष्कर्षों तक पहुँचने की कोशिश की। जैसे यह कि उनकी आस्था बदलती रही है लेकिन मूल्य के प्रति दृढ़ता निरन्तर बनी रही है। वे साहित्य में सुभाष चन्द्र बोस और भगत सिंह की विचारधारा से चलकर गाँधी और लोहिया, जयप्रकाश नारायण की विचारधारा तक पहुँचते हैं और यह उनकी प्रगतिशीलता का प्रमाण है। ओम थानवी ने बताया कि अज्ञेय ने जिन विडंबनाओं की तरफ संकेत किए आज हमारे समाज में वे अधिक भयावह रूप में मौजूद दिख रहे हैं।

इस आयोजन का समापन **श्री अनन्त मिश्र** की अध्यक्षता में **श्री सरोज पाण्डेय, श्री उद्भव मिश्र, श्री इन्द्र कुमार दीक्षित, श्री गिरिधर करुण, श्री अवधेश प्रधान, श्री नन्द किशोर आचार्य** और **प्रकाश उदय** के काव्यपाठ से हुआ। **श्री अनन्त मिश्र** ने अपनी ही नहीं, अज्ञेय सहित अपने कुछ अन्य प्रिय कवियों की कविताएँ भी सुनाईं।

आयोजन में सभी वक्ताओं को माल्यार्पण और अंगवस्त्र से **श्री दयानिधि मिश्र,** सचिव, विद्याश्री न्यास ने सम्मानित किया। संयोजन ओर संचालन का दायित्व **प्रकाश उदय** ने निभाया।

पण्डित विद्यानिवास मिश्र स्मृति व्याख्यान एवं 'शिक्षा एव संस्कृति' पर राष्ट्रीय परिसंवाद

हिन्दी विभाग, म.गां. काशी विद्यापीठ, श्री शंकर शिक्षायतन एवं विद्याश्री न्यास के संयुक्त तत्वावधान में विद्यापीठ के पुस्तकालय भवन के सभागार में पं. विद्यानिवास मिश्र स्मृति व्याख्यान के रूप में 'शिक्षा और संस्कृति' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय परिसंवाद का उद्घाटन–वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए **श्री केशरी नाथ त्रिपाठी**, राज्यपाल, पश्चिम बंगाल ने भारतीय संस्कृति को भारतीय शिक्षा के आधार के रूप में रेखांकित किया। शिक्षा के लिए पुस्तक की अपेक्षा परिवेश को अधिक महत्त्वपूर्ण मानते हुए उन्होंने संस्कृति से संबद्धता को शिक्षा के स्परूप और संस्कृति के संधान को शिक्षा के उद्देश्य से जोड़ा। उद्घाटन–सत्र की अध्यक्षता करते हुए कुलपति **श्री पृथ्वीश नाग** ने कुलपति के रूप में विद्यानिवास जी के कार्यकाल को अपना आदर्श मानते हुए शिक्षा की संस्कृति के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डाला। इस सत्र में मुख्य अतिथि के हाथों विद्याश्री न्यास के वेबसाइट का लोकार्पण भी किया गया।

'शिक्षा और संस्कृति' विषय पर मुख्य वक्ता **प्रो. कपिल कपूर** ने अपने व्याख्यान के दोनों सत्रों में सूचनाओं के संकलन और रोजगार की योग्यता अर्जित करने के साधन के रूप में शिक्षा की पहचान को घातक बताते हुए पश्चिम की शिक्षा–नीति की नकल पर आधारित भारतीय शिक्षा को संस्कृति विरोधी बताया। उन्होंने इस आधार पर भारत में संप्रति शिक्षितों की तुलना में अशिक्षितों के अधिक संस्कृति–सम्पन्न होने की बात कही। आज शिक्षा न तो संघीय है और न भारतीय भाषा व ना ही भारतीय ज्ञान पर आधारित है। उन्होंने अनेक व्यावहारिक उदाहरणों के माध्यम से शिक्षा के सांस्कृतिक और संस्कृति के शैक्षणिक आयामों तथा शिक्षा और संस्कृति के भारतीय मूल्यों को उद्घाटित किया। हीनभावना, साझेदारी और सामंजस्य की भावना का अभाव, एकता की जगह एकरूपता को महत्त्व देना उस भारतीय शिक्षा–संस्कृति के नितान्त विरुद्ध है जो ज्ञान आधारित है, भिन्नताओं को जगह देने वाली और उत्सवप्रिय है।

प्रो. अवधेश प्रधान ने भारतीय मान–मूल्यों, भाषा–बोली और आत्मश्रद्धा को भारतीय शिक्षा–संस्कृति के लिए आवश्यक माना। प्रथम सत्र के अध्यक्षीय वक्तव्य में **प्रो. के.पी. पाण्डेय** ने सूचना को ज्ञान में बदलने की जरूरत पर बल दिया। दूसरे सत्र में **श्री धनंजय सिंह** ने भारतीय मन–मानस को समझने में पश्चिमी मानसिकता की सीमाओं का उल्लेख किया। **डॉ. जितेन्द्रनाथ मिश्र** ने शिक्षा सम्बंधी आज की न्यूनताओं की जिम्मेदारी औरों पर डालने के बजाय अपने ऊपर लेने की बात कही। **श्री राजनाथ त्रिपाठी** ने शिक्षा–संस्कृति के भारतीय स्परूप पर प्रकाश डाला। अध्यक्षीय संबोधन में **प्रो. यदुनाथ प्रसाद दूबे** ने एक शिक्षक के रूप में अपने व्यावहारिक अनुभव के आधार पर शिक्षा और संस्कृति के विभिन्न पक्षों को प्रस्तुत किया।

आयोजन का शुभारम्भ **श्री उमापति दीक्षित** के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण **श्री शिवकुमार मिश्र** ने तथा दोनों सत्रों का संयोजन **श्री श्रद्धानन्द** ने किया। धन्यवाद–ज्ञापन **श्री दयानिधि मिश्र**, सचिव, विद्याश्री न्यास ने किया।

परिसंवाद में **प्रो. अरविन्द पाण्डेय, प्रो. मंजुला चतुर्वेदी, प्रो. प्रमोद पाण्डेय, प्रो. अनुराग यादव, पवन कुमार शास्त्री** एवं बड़ी संख्या में अध्यापकों व छात्र–छात्राओं ने सहभागिता की।

पण्डित मधुसूदन ओझा स्मृति–संवाद एवं 'यज्ञ–विज्ञान' पर राष्ट्रीय परिसंवाद

संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, विद्याश्री न्यास एवं श्री शंकर शिक्षायतन के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 17 नवम्बर 2016 को संकाय के सभागार में 'पं. मधुसूदन ओझा के रचना–कर्म के सन्दर्भ में 'यज्ञ–विज्ञान' विषयक राष्ट्रीय परिसंवाद **प्रो. चन्द्रमा पाण्डेय** की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसके मुख्य अतिथि **प्रो. प्रभुनाथ द्विवेदी** एवं बीज वक्तव्य हृदय रंजन शर्मा ने प्रस्तुत किया। इनके अतिरिक्त **प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी, डॉ. उपेन्द्र कुमार त्रिपाठी** एवं **सुनील कात्यायन** ने भी वक्तव्य दिया।

मुख्य अतिथि **श्री प्रभुनाथ द्विवेदी** ने अपने वक्तव्य में मधुसूदन ओझा के 200 से अधिक ग्रंथों के विशाल वाङ्मय पर प्रकाश डालते हुए बताया कि पण्डित ओझा ने वेद–विद्या का बड़ा उपकार किया एवं केवल 'यज्ञ–विज्ञान' से सम्बंधित 20 से अधिक पुस्तकें लिखीं। प्रो. द्विवेदी ने यज्ञों के विविध प्रकारों की चर्चा की और कहा कि यज्ञ के बिना हम जीवन की परिकल्पना नहीं कर सकते। **प्रो. हृदय रंजन शर्मा** ने अपने विद्वत्तापूर्ण बीज–वक्तव्य में बताया कि 'यज्ञ–विज्ञान' सृष्टि एवं जीवन के स्थूल एवं सूक्ष्म पक्षों की पूर्णता का प्राचीनतम

सनातन (सद् गतिशीन रहने वाला) विज्ञान है। आधुनिक विज्ञान आधिभौतिक जगत से संबद्ध दिक (दिशा), देश (स्थान) तथा काल (समय) के स्थूल एवं सूक्ष्म स्वरूपों का अनुसंधान करने में जहाँ समर्थ है, वहीं वैदिक यज्ञ–विज्ञान आधिभौतिक जगत के साथ अधिदैविक तथा आध्यात्मिक जगत से सम्बद्ध चेतना शक्ति के तात्त्विक स्वरूपों को प्रकाशित करके सृष्टि एवं जीवन को सुख–शान्ति एवं समृद्धि प्रदान करने वाला विज्ञान है। **डॉ. उपेन्द्र कुमार त्रिपाठी** ने कहा कि यज्ञ में जो आहुति प्रदान करते हैं, वह सूर्य को प्राप्त होती है, जिसके द्वारा मेघ वृष्टि, वृष्टि से अन्न एवं अन्न से सम्पूर्ण प्राणियों का पोषण होता है। **प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी** ने बताया कि मधुसूदन ओझा अद्वितीय प्रतिभा–सम्पन्न विद्वान थे किन्तु उनके रचना पर गहन अध्ययन, मनन व चिंतन की आवश्यकता है। **डॉ. सुनील कात्यायन** ने यज्ञ में मंत्रों, हवियों को ऋतु के विविध आयामों से जोड़ते हुए 'यज्ञ–विज्ञान' की व्याख्या की।

प्रोफेसर चन्द्रमा पाण्डेय ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में बताया कि आज 'यज्ञ–विज्ञान' भारतीय एवं वैश्विक मनीषियों के लिए अति उपयोगी है। इस पर विश्व स्तर पर शोध–अनुसंधान की महती संभावना है क्योंकि यज्ञ ही सृष्टि का मूल है।

परिसंवाद का शुभारंभ **डॉ. उमापति दीक्षित** के मंगलाचरण से हुआ अतिथियों का स्वागत **डॉ. दयानिधि मिश्र**, धन्यवाद–ज्ञापन **धनंजय कुमार पाण्डेय** एवं संचालन **शिवराम गंगोपाध्याय** ने किया। परिचर्चा में **प्रो. कौशलेन्द्र पाण्डेय, डॉ. राजाराम शुक्ल, प्रो. चन्द्रमौलि उपाध्याय, डॉ. उदयन मिश्र, माधव जनार्दन रटाटे, शंकर कुमार मिश्र, ध्रुवनारायण पाण्डेय** आदि सहित भारी संख्या में छात्र व छात्राएँ उपस्थित थे।